रविवार 3 मई, 2020

विषय — हमेशा की सजा

स्वर्ण पाठ: नीतिवचन 28 : 13

"जो अपने अपराध छिपा रखता है, उसका कार्य सुफल नहीं होता, परन्तु जो उन को मान लेता और छोड़ भी देता है, उस पर दया की जायेगी।"

उत्तरदायी अध्ययन: **भजन संहिता** 25 : 1, 2, 5, 8, 11, 16, 18

1 हे यहोवा मैं अपने मन को तेरी ओर उठाता हूं।
2 हे मेरे परमेश्वर, मैं ने तुझी पर भरोसा रखा है, मुझे लज्जित होने न दे; मेरे शत्रु मुझ पर जयजयकार करने न पाएं।
5 मुझे अपने सत्य पर चला और शिक्षा दे, क्योंकि तू मेरा उद्धार करने वाला परमेश्वर है; मैं दिन भर तेरी ही बाट जोहता रहता हूं।
8 यहोवा भला और सीधा है; इसलिये वह पापियों को अपना मार्ग दिखलाएगा।
11 हे यहोवा अपने नाम के निमित्त मेरे अधर्म को जो बहुत हैं क्षमा कर॥
16 हे यहोवा मेरी ओर फिरकर मुझ पर अनुग्रह कर; क्योंकि मैं अकेला और दीन हूं।
18 तू मेरे दु:ख और कष्ट पर दृष्टि कर, और मेरे सब पापों को क्षमा कर॥

पाठ उपदेश

बाइबल

1. 2 शमूएल 12 : 1-10, 13, 24 (बतशेबा) (पत्नी को), 24 (जन्म देना), 29, 30

1 तब यहोवा ने दाऊद के पास नातान को भेजा, और वह उसके पास जा कर कहने लगा, एक नगर में दो मनुष्य रहते थे, जिन में से एक धनी और एक निर्धन था।
2 धनी के पास तो बहुत सी भेड़-बकरियां और गाय बैल थे;

3 परन्तु निर्धन के पास भेड़ की एक छोटी बच्ची को छोड़ और कुछ भी न था, और उसको उसने मोल ले कर
जिलाया था। और वह उसके यहां उसके बालबच्चों के साथ ही बढ़ी थी; वह उसके टुकड़े में से खाती, और
उसके कटोरे में से पीती, और उसकी गोद मे सोती थी, और वह उसकी बेटी के समान थी।
4 और धनी के पास एक बटोही आया, और उसने उस बटोही के लिये, जो उसके पास आया था, भोजन
बनवाने को अपनी भेड़-बकरियों वा गाय बैलों में से कुछ न लिया, परन्तु उस निर्धन मनुष्य की भेड़ की
बच्ची ले कर उस जन के लिये, जो उसके पास आया था, भोजन बनवाया।
5 तब दाऊद का कोप उस मनुष्य पर बहुत भड़का; और उसने नातान से कहा, यहोवा के जीवन की शपथ,
जिस मनुष्य ने ऐसा काम किया वह प्राण दण्ड के योग्य है;
6 और उसको वह भेड़ की बच्ची का औगुणा भर देना होगा, क्योंकि उसने ऐसा काम किया, और कुछ दया
नहीं की।
7 तब नातान ने दाऊद से कहा, तू ही वह मनुष्य है। इस्राएल का परमेश्वर यहोवा यों कहता है, कि मैं ने तेरा
अभिशेक कराके तुझे इस्राएल का राजा ठहराया, और मैं ने तुझे शाऊल के हाथ से बचाया;
8 फिर मैं ने तेरे स्वामी का भवन तुझे दिया, और तेरे स्वामी की पत्नियां तेरे भोग के लिये दीं; और मैं ने
इस्राएल और यहूदा का घराना तुझे दिया था; और यदि यह थोड़ा था, तो मैं तुझे और भी बहुत कुछ देने
वाला था।
9 तू ने यहोवा की आज्ञा तुच्छ जान कर क्यों वह काम किया, जो उसकी दृष्टि में बुरा है? हित्ती ऊरिय्याह को
तू ने तलवार से घात किया, और उसकी पत्नी को अपनी कर लिया है, और ऊरिय्याह को अम्मोनियों की
तलवार से मरवा डाला है।
10 इसलिये अब तलवार तेरे घर से कभी दूर न होगी, क्योंकि तू ने मुझे तुच्छ जानकर हित्ती ऊरिय्याह की
पत्नी को अपनी पत्नी कर लिया है।
13 तब दाऊद ने नातान से कहा, मैं ने यहोवा के विरुद्ध पाप किया है। नातान ने दाऊद से कहा, यहोवा ने तेरे
पाप को दूर किया है; तू न मरेगा।
24 तब दाऊद ने अपनी पत्नी बतशेबा को शान्ति दी, और वह उसके पास गया; और असके एक पुत्र उत्पन्न
हुआ, और उसने उसका नाम सुलैमान रखा। और वह यहोवा का प्रिय हुआ।
29 तब दाऊद सब लोगों को इकट्ठा करके रब्बा को गया, और उस से युद्ध करके उसे ले लिया।
30 तब उसने उनके राजा का मुकुट, जो तौल में किक्कार भर सोने का था, और उस में मणि जड़े थे, उसको
उसके सिर पर से उतारा, और वह दाऊद के सिर पर रखा गया। फिर उसने उस नगर की बहुत ही लूट
पाई।

2. भजन संहिता 51 : 1-4, 6-10, 12

1 हेपरमेश्वर, अपनी करूणा के अनुसार मुझ पर अनुग्रह कर; अपनी बड़ी दया के अनुसार मेरे अपराधों को
मिटा दे।

2 मुझे भलीं भांति धोकर मेरा अधर्म दूर कर, और मेरा पाप छुड़ाकर मुझे शुद्ध कर!
3 मैं तो अपने अपराधों को जानता हूं, और मेरा पाप निरन्तर मेरी दृष्टि में रहता है।
4 मैं ने केवल तेरे ही विरुद्ध पाप किया, और जो तेरी दृष्टि में बुरा है, वही किया है, ताकि तू बोलने में धर्मी और न्याय करने में निष्कलंक ठहरे।
6 देख, तू हृदय की सच्चाई से प्रसन्न होता है; और मेरे मन ही में ज्ञान सिखाएगा।
7 जूफा से मुझे शुद्ध कर, तो मैं पवित्र हो जाऊंगा; मुझे धो, और मैं हिम से भी अधिक श्वेत बनूंगा।
8 मुझे हर्ष और आनन्द की बातें सुना, जिस से जो हड्डियां तू ने तोड़ डाली हैं वह मगन हो जाएं।
9 अपना मुख मेरे पापों की ओर से फेर ले, और मेरे सारे अधर्म के कामों को मिटा डाल॥
10 हे परमेश्वर, मेरे अन्दर शुद्ध मन उत्पन्न कर, और मेरे भीतर स्थिर आत्मा नये सिरे से उत्पन्न कर।
12 अपने किए हुए उद्धार का हर्ष मुझे फिर से दे, और उदार आत्मा देकर मुझे सम्भाल॥

3. लूका 19 : 1-10

1 वह यरीहो में प्रवेश करके जा रहा था।
2 और देखो, ज़क्कई नाम एक मनुष्य था जो चुंगी लेने वालों का सरदार और धनी था।
3 वह यीशु को देखना चाहता था कि वह कौन सा है परन्तु भीड़ के कारण देख न सकता था। क्योंकि वह नाटा था।
4 तब उस को देखने के लिये वह आगे दौड़कर एक गूलर के पेड़ पर चढ़ गया, क्योंकि वह उसी मार्ग से जाने वाला था।
5 जब यीशु उस जगह पहुंचा, तो ऊपर दृष्टि कर के उस से कहा; हे ज़क्कई झट उतर आ; क्योंकि आज मुझे तेरे घर में रहना अवश्य है।
6 वह तुरन्त उतर कर आनन्द से उसे अपने घर को ले गया।
7 यह देख कर सब लोगे कुड़कुड़ा कर कहने लगे, वह तो एक पापी मनुष्य के यहां जा उतरा है।
8 ज़क्कई ने खड़े होकर प्रभु से कहा; हे प्रभु, देख मैं अपनी आधी सम्पत्ति कंगालों को देता हूं, और यदि किसी का कुछ भी अन्याय करके ले लिया है तो उसे चौगुना फेर देता हूं।
9 तब यीशु ने उस से कहा; आज इस घर में उद्धार आया है, इसलिये कि यह भी इब्राहीम का एक पुत्र है।
10 क्योंकि मनुष्य का पुत्र खोए हुओं को ढूंढ़ने और उन का उद्धार करने आया है॥

4. 2 इतिहास 7 : 14

14 तब यदि मेरी प्रजा के लोग जो मेरे कहलाते हैं, दीन हो कर प्रार्थना करें और मेरे दर्शन के खोजी हो कर अपनी बुरी चाल से फिरें, तो मैं स्वर्ग में से सुन कर उनका पाप क्षमा करूंगा और उनके देश को ज्यों का त्यों कर दूंगा।

5. 2 इतिहास 30 : 9 (क्योंकि)

9 ... क्योंकि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा अनुग्रहकारी और दयालु है, और यदि तुम उसकी ओर फिरोगे तो वह अपना मुंह तुम से न मोड़ेगा।

6. यहूदा : 24, 25

24 अब जो तुम्हें ठोकर खाने से बचा सकता है, और अपनी महिमा की भरपूरी के साम्हने मगन और निर्दोष करके खड़ा कर सकता है।
25 उस अद्वैत परमेश्वर हमारे उद्धारकर्ता की महिमा, और गौरव, और पराक्रम, और अधिकार, हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा जैसा सनातन काल से है, अब भी हो और युगानुयुग रहे। आमीन॥

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 35 : 30 केवल

प्रेम का डिजाइन पापी को सुधारना है।

2. 10 : 31-4

क्या आप ज्ञान को दया करने के लिए कहते हैं और पाप को दंडित करने के लिए नहीं? फिर "आप गलत पूछते हैं।" सज़ा के बिना, पाप कई गुना होगा। यीशु की प्रार्थना, "हमें हमारे पापों को माफ कर दो," क्षमा की शर्तों को भी निर्दिष्ट किया। व्यभिचारी स्त्री को क्षमा करते हुए उसने कहा, "जाओ, और अब पाप मत करो।"

3. 497 : 9 (हम)-12

हम पाप को नष्ट करने में ईश्वर की क्षमा और आध्यात्मिक समझ को स्वीकार करते हैं जो बुराई को असत्य करार देती है। लेकिन पाप में विश्वास को तब तक दंडित किया जाता है जब तक कि विश्वास बना रहता है।

4. 5 : 22-28

प्रार्थना को पाप को रद्द करने के लिए स्वीकारोक्ति के रूप में इस्तेमाल नहीं किया जाना है। इस तरह की त्रुटि सच्चे धर्म को बाधित करेगी। पाप को क्षमा कर दिया जाता है क्योंकि यह मसीह, सत्य और जीवन द्वारा नष्ट हो जाता है। यदि प्रार्थना इस विश्वास को पोषित करती है कि पाप को रद्द कर दिया गया है, और उस आदमी को केवल प्रार्थना करने से बेहतर बनाया जाता है, तो प्रार्थना एक बुराई है। वह बुरा होता है जो पाप जारी रखता है क्योंकि वह खुद को एक क्षमा के रूप में सपने देखता है।

5. 5:3-6

गलत काम के लिए दु:ख है, लेकिन सुधार की दिशा में एक कदम और बहुत आसान कदम है। ज्ञान द्वारा आवश्यक अगला और महान कदम हमारी ईमानदारी की परीक्षा है, - अर्थात्, सुधार।

6. 357 : 1-6

सामान्य न्याय में, हमें यह स्वीकार करना चाहिए कि परमेश्वर ने मनुष्य को वह करने के लिए दंडित नहीं किया जो उसने मनुष्य को करने में सक्षम बनाया, और वह जानता था कि मनुष्य क्या करेगा। भगवान है "किसका आंखें ऐसी शुद्ध हैं स्पष्ट नहीं देख सकते।" इसे स्वीकार करके नहीं, बल्कि एक झूठ को खारिज करके, हम सत्य को बनाए रखते हैं।

7. 4 : 17-22

केवल यह कहते हुए कि हम ईश्वर से प्रेम कर सकते हैं, हमसे कभी प्रेम नहीं करेंगे; लेकिन बेहतर और पवित्र होने की लालसा, दैनिक निगरानी में और दिव्य चरित्र के अधिक आत्मसात करने के प्रयास में, ढालेगी और हमें नए सिरे से बनाएगी, जब तक कि हम उसकी समानता में नहीं जागते।

8. 242 : 1-14

पश्चाताप, आध्यात्मिक बपतिस्मा, और उत्थान के माध्यम से, नश्वर अपने भौतिक विश्वासों और झूठी व्यक्तित्व को बंद कर देते हैं। यह केवल समय का सवाल है "कि छोटे से ले कर बड़े तक, सब के सब मेरा ज्ञान रखेंगे।" पदार्थ के दावों से इंकार आत्मा की खुशियों की ओर, मानव स्वतंत्रता और शरीर पर अंतिम विजय की ओर एक बड़ा कदम है।

स्वर्ग के लिए एक रास्ता है, सद्भाव; और ईश्वरीय विज्ञान में मसीह हमें इस मार्ग को दिखाता है। कोई और वास्तविकता नहीं है, अच्छे ईश्वर और उसके प्रतिबिंब को जानने और इंद्रियों के दर्द और सुख से श्रेष्ठ होने के अलावा जीवन की कोई अन्य चेतना नहीं है।

9. 404 : 10-16, 19-21 अगला पृष्ठ

वासना, द्वेष, और सभी प्रकार की बुराई रोगग्रस्त विश्वास हैं, और आप उन्हें केवल उन दुष्ट उद्देश्यों को नष्ट करके नष्ट कर सकते हैं जो उन्हें उत्पन्न करते हैं। यदि पश्चाताप नश्वर मन में बुराई खत्म हो गई है, जबकि इसका प्रभाव अभी भी व्यक्ति पर बना हुआ है, तो आप इस विकार को दूर कर सकते हैं क्योंकि भगवान का कानून पूरा हो गया है और अपराध को रद्द कर देता है। स्वस्थ पापी कठोर पापी होता है।

यह विश्वास, कि पाप में कोई वास्तविक आनंद नहीं है, ईसाई विज्ञान के धर्मशास्त्र में सबसे महत्वपूर्ण बिंदुओं में से एक है। पापी के इस नए और सच्चे दृष्टिकोण के बारे में जानने के लिए, उसे दिखाओ कि पाप कोई खुशी नहीं देता है, और यह ज्ञान उसके नैतिक साहस को मजबूत करता है और बुराई करने और अच्छे से प्यार करने की उसकी क्षमता को बढ़ाता है।

बीमार को ठीक करना और पापी को सुधारना क्रायश्चियन साइंस में एक ही बात है। दोनों इलाज के लिए एक ही विधि की आवश्यकता होती है और यह सत्य में अविभाज्य हैं। घृणा, ईर्ष्या, बेईमानी, भय, और ऐसी अन्य चीजें, एक आदमी को बीमार बनाती हैं, और न तो भौतिक चिकित्सा और न ही मन उसे स्थायी रूप से मदद कर सकता है, यहां तक कि शरीर में भी, जब तक कि वह उसे मानसिक रूप से बेहतर नहीं बनाता है, और इसलिए उसे उसके विध्वंसक से बचाता है। मूल त्रुटि नश्वर मन है। घृणा क्रूर इच्छाओं को भड़काती है। बुरे इरादों और उद्देश्यों का भोग किसी भी आदमी को एक निराशाजनक पीड़ित बनाता है, जो सबसे कम प्रकार के साहस से ऊपर है।

क्रिश्चियन साइंस मनुष्य को भविष्यवाणियों में महारत हासिल करने के लिए आज्ञा देता है, - दया के साथ घृणा करने के लिए, शुद्धता के साथ वासना को जीतने के लिए, दान के साथ बदला लेने के लिए, और ईमानदारी के साथ धोखे को दूर करने के लिए। यदि आप स्वास्थ्य, खुशी और सफलता के खिलाफ षड्यंत्रकारियों की एक सेना को संजोना नहीं चाहते हैं, तो इन त्रुटियों को उनके शुरुआती चरणों में नष्ट कर दें। वे आपको न्यायाधीश के पास पहुंचाएंगे, जो त्रुटि के खिलाफ सच्चाई का मध्यस्थ होगा। न्यायाधीश आपको न्याय दिलाएगा, और नश्वर मन और शरीर पर नैतिक कानून की सजा दी जाएगी। जब तक आपको अंतिम भुगतान नहीं किया जाता है, तब तक दोनों को पदच्युत किया जाएगा - जब तक कि आपने भगवान के साथ अपना खाता संतुलित नहीं किया है। "मनुष्य जो कुछ बोता है, वही काटेगा।" अच्छा इंसान आखिरकार अपने पाप के डर को दूर कर सकता है। स्वयं को नष्ट करना पाप की आवश्यकता है। अमर मनुष्य ईश्वर की सरकार को प्रदर्शित करता है, जिसमें पाप करने की शक्ति नहीं है।

10. 339 : 11-19

पापी को इस तथ्य से कोई प्रोत्साहन नहीं मिल सकता है कि विज्ञान बुराई की असत्यता को प्रदर्शित करता है, क्योंकि पापी पाप की वास्तविकता बना देगा, - जो वास्तविक असत्य है, और इस प्रकार "क्रोध के दिन के

खिलाफ क्रोध" एकत्र करता है। वह खुद के खिलाफ एक साजिश में शामिल हो रहा है, - अपने स्वयं के जागरण के खिलाफ भयानक अवास्तविकता जिसके द्वारा उसे धोखा दिया गया है। केवल वे ही, जो पाप का पश्चाताप करते हैं और असत्य का त्याग करते हैं, बुराई की असत्यता को पूरी तरह से समझ सकते हैं।

11. 6 : 17 *केवल*, 18-22

"भगवान प्यार है।"

यह मानने के लिए कि ईश्वर क्षमा करता है या पाप को दंडित करता है जैसा कि उसकी दया की मांग की गई है या बिना शर्त के, प्यार को गलत समझना और प्रार्थना को अपराध के लिए सुरक्षा-वाल्व बनाना है।

12. 4 : 12-16

हमेशा अच्छा रहने की आदतन संघर्ष एक दैनिक प्रार्थना है। इसका मकसद उनके द्वारा लाए गए आशीर्वाद में प्रकट होना है, — वह आशीर्वाद, जो भले ही श्रव्य शब्दों में स्वीकार नहीं किया जाता है, हमारी योग्यता को प्यार का भागीदार बनाते हैं।

13. 6:3-5

ईश्वरीय प्रेम मनुष्य को सुधारता है और नियंत्रित करता है। पुरुष क्षमा मांग सकते हैं, लेकिन यह ईश्वरीय सिद्धांत केवल पापी को सुधारता है।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वाणी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6